ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के सातवें दीक्षांत–समारोह के अवसर पर बिहार के महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

दिनांक–06 जनवरी, 2017, स्थान–डॉ॰ नरेन्द्र झा स्टेडियम, दरभंगा)

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के सातवें दीक्षांत–समारोह के अवसर पर प्रमुख रूप से उपस्थित राज्य के राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री श्री मदन मोहन झा जी, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ॰ साकेत कुशवाहा जी, मुख्य वक्ता प्रो॰ गिरीशचन्द्र त्रिपाठी जी, प्रतिकुलपति श्री एस॰ मुमताजुद्दीन जी, कुलसचिव श्री अजित कुमार सिंह जी, अधिषद्, अभिषद् एवं विद्वत–परिषद् के सदस्यगण, अतिथिगण, शिक्षकगण, शिक्षकेत्तर कर्मीगण, प्यारे विद्यार्थीगण, मीडिया–प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!!

मिथिला के महिमामय सांस्कृतिक वातावरण के बीच स्वयं को पाकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। इस भूमि की सारस्वत परम्परा का जब स्मरण करते हैं, तो सच्चे अर्थों में यह अनुभूति होती है कि शिक्षा किस प्रकार व्यक्ति को उदार, महान और ऐतिहासिक बना सकती है। वाचस्पति मिश्र इसी भूमि की विभूति हैं। उदयनाचार्य, पक्षधर मिश्र एवं चण्डेश्वर जी –जैसे दिग्गज दार्शनिकों एवं सिद्धों की विद्या से गौरवान्वित यह मिथिलांचल, मैथिल–कोकिल विद्यापति के गीतों से रससिक्त, राष्ट्रकवि दिनकर की ओजस्वी वाणी से अभिप्रेरित और नागार्जुन जैसे जनता के कवि के आह्वान से सदैव जागृत रहा है। आधुनिक शिक्षा के स्तम्भ–द्वय पिता–पुत्र सर गंगानाथ झा एवं डॉ॰ अमरनाथ झा को देश से लेकर विदेशों तक कौन नहीं जानता? मैं ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के सातवें दीक्षान्त–समारोह में भाग लेकर अपने को सौभाग्यशाली मानता हूँ।

महाराजाधिराज सर कामेश्वर सिंह के शिक्षा–प्रेम को कैसे भुलाया जा सकता है? आज यह विश्वविद्यालय उनकी दानशीलता के

प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में हमारे सामने है, जिनके निवासीय प्रासादों को प्राप्त कर विश्वविद्यालय अपने पैंतालिस वर्षों की सर्वतोन्मुखी यात्रा कर चुका है। प्रचलित समस्त शिक्षा–प्रणाली एवं संकायों के अन्तर्गत इस विश्वविद्यालय ने उल्लेखनीय मानक रखे हैं। इसके अतिरिक्त इस विश्वविद्यालय को यह गौरव प्राप्त है कि इसने अपने प्रथम महिला प्रौद्योगिकी संस्थान से समस्त उत्तर भारत में नारी–सशक्तीकरण का परचम लहराया है। स्मरणीय है कि इस संस्थान की स्थापना में पूर्व राष्ट्रपति स्व॰ डॉ॰ ए॰पी॰जे॰ अब्दुल कलाम का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इस विश्वविद्यालय द्वारा पहली बार केन्द्रीकृत ऑनलाइन नामांकन–प्रक्रिया सभी अंगीभूत एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों में आरम्भ की गयी है, जिससे छात्र एवं अभिभावक अनेक प्रकार की परेशानियों से छुटकारा पा रहे हैं। 'नैक मूल्यांकन' में इस विश्वविद्यालय की प्रशंसनीय भूमिका रही है। पूरे राज्य में जिन महाविद्यालयों में 'नैक मूल्यांकन' सम्भव हो सका है, उनमें एक तिहाई महाविद्यालय ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के ही हैं। इस विश्वविद्यालय के अन्तर्गत चन्द्रधारी मिथिला विज्ञान महाविद्यालय दरभंगा को इस मूल्यांकन में ''A'' ग्रेड प्राप्त हुआ है, जो प्रशंसनीय है। 'रूसा' से पिछले वित्तीय वर्ष में बीस करोड़ रूपये का अनुदान छात्रावासों, प्रयोगशालाओं एवं प्रेक्षागृहों के निर्माण हेतु प्राप्त करने में भी इस विश्वविद्यालय ने सफलता पाई है।

यह संतोषजनक है कि ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय ने 'Choice Based Credit System' पर सभी विषयों का 'सिलेबस' तैयार कर इसे लागू करने का निर्णय लिया है। 'बायोमेट्रिक प्रणाली' कार्यान्वित कर विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों, कर्मियों एवं छात्रों की उपस्थिति यहाँ दर्ज की जाती है। विश्वविद्यालय की स्थापना के श्रेय–पुरूष महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह के नाम पर स्थापित 'महाराजाधिराज डॉ॰ कामेश्वर सिंह मेमोरियल चेयर' की स्थापना विश्वविद्यालय की उपलब्धि

है। विश्वविद्यालय ने 'स्वच्छता का समाजशास्त्र' विषय को स्नातक एवं स्नातकोत्तर के पाठ्यक्रम में शामिल किया है। फ्रेंच भाषा में एकवर्षीय प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम में अध्यापन यहाँ चल रहा है। 'वीमन स्टडीज' पाठ्यक्रम का संचालन नारी सशक्तीकरण के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र में ''सर्टिफिकेट कोर्स इन ह्यूमन कॉन्शेसनेस एण्ड यौगिक साइन्स'' का शुभारंभ किया जा चुका है। ये सारे नवाचारी प्रयास उच्च शिक्षा के विकास में सहायक सिद्ध होंगे।

मेरे प्रिय छात्र–छात्राओं! जमीन से जुड़े रहनेवाले और उसे अपने पैर का भार प्रदान करनेवाले ही आकाश की ओर छलांग भर सकते हैं। आपके उत्साह और चहल–पहल से मुझे यह कहने में प्रसन्नता हो रही है कि आप इस भूमि और विश्वविद्यालय के ज्ञान–प्रवाह के सुयोग्य और सफल स्नातक हैं। आपको इस विश्वविद्यालय की चहारदीवारी से निकलकर दुनिया को मापना और तौलना होगा। आपने यहाँ जो कुछ सीखा है, उसको समझकर प्रयोग करना होगा। आप विशाल भारत के भविष्य हैं। आपको सफलता के शीर्ष पर पहुँचना है।

मित्रों, मिथिला जनक और जानकी के ज्ञान और सहिष्णुता की भूमि है। धरती की बेटी माता सीता ने इसे सहिष्णुता की सीख दी है, उसे कृषि–सम्पन्न बनाकर इसे धन–धान्य से पूर्ण किया है और विदेहराज जनक की आत्म–शिक्षा ने बताया है कि सब कुछ नष्ट हो जाने पर भी हमारी आत्मा अगर चेतन है, तो हमारी शिक्षा सम्पूर्ण मानी जाएगी। महात्मा बुद्ध और गाँधी भी राष्ट्र–निर्माण और उसकी सुरक्षा के लिए ऐसी ही शिक्षा की जरूरत बताते हैं, जो सच्चे मनुष्य का निर्माण करे। गाँधीजी का वक्तव्य है कि–''सच्ची शिक्षा वही है, जो मनुष्य को सच्चा और अच्छा मनुष्य बनाये। उसके समग्र विकास में योगदान दे और उसे कर्त्तव्य–पालन के लिए प्रेरित करे। विद्या–प्राप्ति मानवता और नैतिकता की रक्षा से जुड़ी होनी चाहिए।'' मेरा मानना है कि जो अच्छा

मनुष्य है; यदि वह हिन्दू है तो अच्छा हिन्दू होगा, यदि वह मुस्लिम है तो अच्छा मुस्लिम होगा, यदि अध्यापक है तो अच्छा अध्यापक होगा, यदि राजनेता है तो वह अच्छा राजनेता होगा, अर्थात् अच्छा मनुष्य समाज के हर क्षेत्र में अच्छा ही होगा। शिक्षा के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए हमारे भारतीय संविधान के प्रमुख रचयिता डॉ॰ अम्बेदकर कहते हैं कि –''शिक्षा ही एक ऐसा साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य स्वयं को प्रबुद्ध बनाकर सामाजिक शक्तियों को संगठित कर सकता है और अन्याय, शोषण एवं बुराइयों का अंत करने में सहायक है। शिक्षा के जरिये ही मनुष्य आंतरिक और बाह्य गुलामी से लड़ सकता है और यही उसे व्यक्तिगत एवं सामाजिक मुक्ति भी दिला सकती है।'' स्पष्ट है, भारतीय चिन्तक भी शिक्षा को ज्ञान–विज्ञान के विकास और रोजगार–प्राप्ति का प्रमुख साधन मानने के साथ–साथ, इसके मानवीय और नैतिक दायित्वों को भी काफी महत्वपूर्ण बताते हैं। मुझे विश्वास है, यह विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों में वैज्ञानिक और आध्यात्मिक चेतना विकसित करने के साथ–साथ, मानवीय भावनाओं का भी समुचित विकास सुनिश्चित कर रहा होगा।

आज के 'दीक्षांत–समारोह' के सुअवसर पर मैं आप सभी को नववर्ष की भी हार्दिक बधाई देता हूँ और आपके उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामना करता हूँ। आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।